जो वैश्विक युद्ध हम नजरअंदाज कर रहे हैं

जबकि मीडिया चक्र आते और जाते रहते हैं, वैश्विक संघर्षों का एक जटिल जाल दुनिया भर की समुदायों को तबाह करता रहता है। यूक्रेन में चल रहे युद्ध से लेकर गाजा में मानवीय संकट तक, सीरिया और यमन में लगातार बढ़ते तनाव से लेकर म्यांमार, सूडान और मेक्सिको में अस्थिरता और हिंसा तक, ये संघर्ष एक विशाल, अक्सर नजरअंदाज किए जाने वाले मानवीय त्रासदी का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ये युद्ध केवल दूर के संघर्ष नहीं हैं – ये गहरे मानवीय पीड़ा, लाखों लोगों का विस्थापन और अंतर्राष्ट्रीय शांति तंत्र के व्यवस्थित ढह जाने का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके वैश्विक प्रभावों के बावजूद, ये संघर्ष अक्सर टुकड़ों और असंगत ध्यान प्राप्त करते हैं, जिससे लाखों लोग हिंसा और अनिश्चितता के चक्र में फंसे रहते हैं।

दुनिया भर में बढ़ते संघर्ष

हाल के संघर्ष

यूक्रेन, गाजा और म्यांमार तीन प्रमुख संघर्ष प्रतिनिधित्व करते हैं। संघर्षों की संख्या द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से सबसे अधिक है, 2024 में 59 देशों में सशस्त्र संघर्ष हो रहे हैं। अमेरिका इन संघर्षों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शामिल है।

संघर्ष के क्षेत्र

मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र संघर्ष का केंद्र है, जहां 45 से अधिक सशस्त्र संघर्ष हैं, जिनमें इज़राइल, फ़िलिस्तीन, सीरिया और यमन शामिल हैं। अफ्रीका में 35 से अधिक अंतर-राष्ट्रीय सशस्त्र संघर्ष हैं, और यूरोप में छह, जिनमें यूक्रेन, रूस और मोल्दोवा शामिल हैं। लैटिन अमेरिका में मेक्सिको और कोलंबिया में दो सक्रिय संघर्ष हैं।

वैश्विक संघर्षों में अमेरिका की भूमिका

प्रत्यक्ष भागीदारी

अमेरिका यूक्रेन और गाजा सहित कई संघर्षों में प्रत्यक्ष भूमिका निभाता है। अमेरिका ने अपने सैन्य और आर्थिक समर्थन के माध्यम से इन क्षेत्रों में बढ़ते तनाव में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अप्रत्यक्ष भागीदारी

अमेरिका सहयोगियों के समर्थन, हथियार बिक्री और विदेश नीति कार्रवाइयों के माध्यम से भी कई संघर्षों में अप्रत्यक्ष भूमिका निभाता है। अमेरिका का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हाथ वर्तमान संघर्षों के 70% से अधिक में है।

अमेरिकी हितों

संघर्षों में अमेरिका की भागीदारी को उसके भू-राजनीतिक हितों, वैश्विक प्रभुत्व बनाए रखने की इच्छा और आर्थिक हितों से जोड़ा जा सकता है। अमेरिका को स्थिर और सुरक्षित वैश्विक व्यवस्था बनाए रखने में रुचि है, जिसे वह अपने हस्तक्षेपों के लिए न्यायोचित ठहराता है। अमेरिका अपने आर्थिक हितों की रक्षा करने और लोकतंत्र और मानवाधिकारों सहित अपने मूल्यों को दुनिया भर में बढ़ावा देने की भी इच्छा रखता है।

अमेरिका द्वारा प्रेरित संघर्ष

19वीं शताब्दी

अमेरिका ने 19वीं शताब्दी में अपने बाह्य हस्तक्षेप शुरू किए, पहले त्रिपोली में 1801 में, फिर 1814 में लैटिन अमेरिका में, 1827 में यूरोप में, 1832 में दक्षिण-पूर्व एशिया में और 1851 में लेवांट में।

1

20वीं शताब्दी

अमेरिका के सैन्य हस्तक्षेप 20वीं शताब्दी में भी जारी रहे, जिनमें जापान, ताइवान, रूस, कैरेबियन, ग्रीनलैंड, नीदरलैंड, आइसलैंड और जर्मनी शामिल हैं। अमेरिका ने पूर्वी यूरोप, मध्य अफ्रीका और पश्चिमी अफ्रीका में भी अपना प्रभाव बढ़ाया।

2

21वीं शताब्दी

अमेरिका के सैन्य हस्तक्षेप 21वीं शताब्दी में भी जारी हैं, जिनमें इराक युद्ध, अफगानिस्तान युद्ध और सीरियाई नागरिक युद्ध प्रमुख हैं। अमेरिका यूक्रेन, गाजा और म्यांमार में चल रहे संघर्षों में भी गहराई से शामिल है।

3

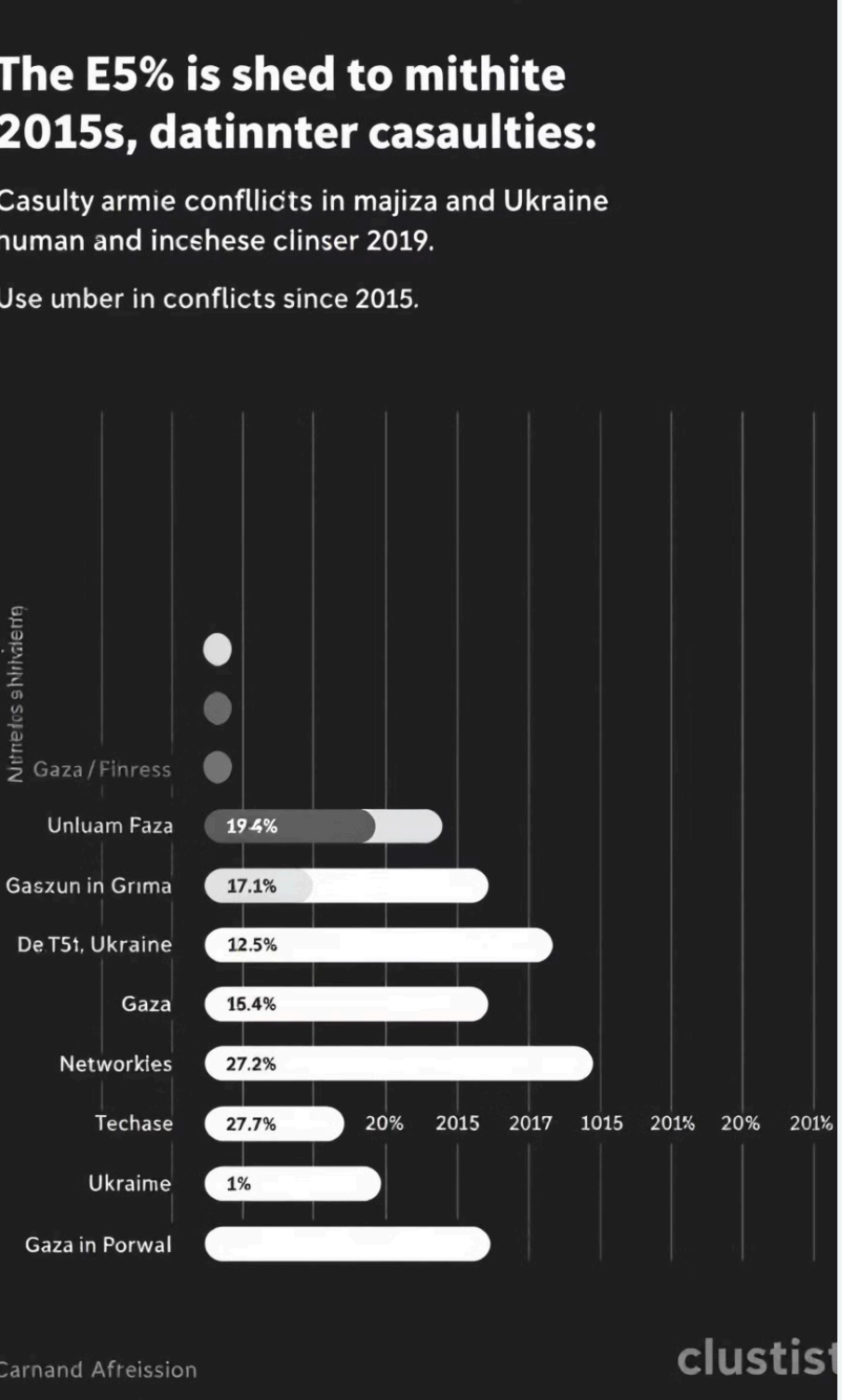

संघर्षों का मानवीय मूल्य

घातक नुकसान

प्रमुख सशस्त्र संघर्षों में घातक नुकसान लगातार बढ़ रहा है। गाज़ा संघर्ष ने 2023 में घातक नुकसान का 21.5% योगदान दिया। मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र में घातक नुकसान में 315% की वृद्धि हुई।

मानवीय संकट

संघर्षों से व्यापक विस्थापन, अकाल और रोग होते हैं। संघर्ष के कारण लाखों लोग अपने घरों से भाग जाते हैं, और कई शरणार्थी शिविरों या अन्य अस्थिर स्थितियों में जीवन-यापन करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

आर्थिक प्रभाव

संघर्षों का अर्थव्यवस्थाओं पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है, चाहे वे संलग्न देशों में हों या वैश्विक स्तर पर। वे व्यापार, निवेश और आर्थिक वृद्धि को बाधित करते हैं।

हथियारों की होड़

अमेरिका के हथियार बिक्री

अमेरिका दुनिया भर के देशों, जिनमें यूक्रेन और इज़राइल भी शामिल हैं, को हथियार की मुख्य आपूर्तिकर्ता रहा है। अमेरिका की हथियार बिक्री लगातार बढ़ रही है और 2024 में यह 1 ट्रिलियन डॉलर से अधिक होने का अनुमान है। ये हथियार बिक्री दुनिया भर में संघर्षों को भड़का रही हैं और एक खतरनाक हथियार होड़ को जन्म दे रही हैं।

रक्षा कंपनियों के लाभ

अमेरिका की रक्षा उद्योग वैश्विक हथियार व्यापार में एक प्रमुख खिलाड़ी है। अमेरिकी रक्षा कंपनियां हथियारों और सैन्य उपकरणों की बिक्री से लाभ कमा रही हैं। यह अमेरिका को संघर्षों में शामिल रहने और उच्च स्तर के सैन्य व्यय को बनाए रखने के लिए और प्रेरित करता है।

परिणाम

वैश्विक हथियार होड़ के परिणाम विनाशकारी हैं। यह संघर्षों को भड़काता है, हिंसा को बढ़ाता है और क्षेत्रों को अस्थिर करता है। यह विकास और गरीबी उन्मूलन के लिए संसाधनों को भी खींच लेता है।

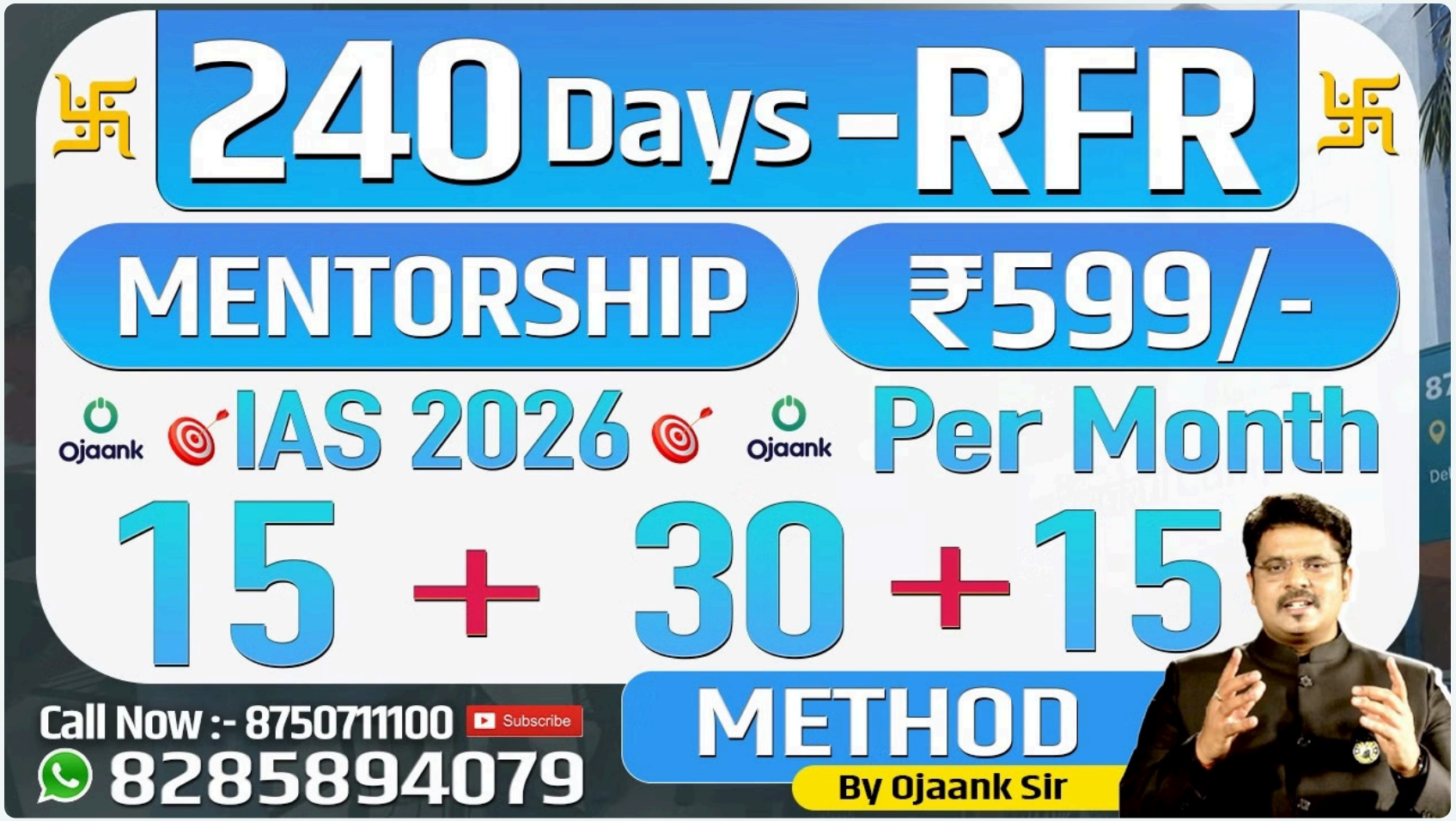

Free Test Link - https://ojaankias.akamai.net.in/new-courses/492

शांति का आह्वान

वैश्विक संवाद

हमें संघर्षों के मूल कारणों, जैसे गरीबी, असमानता और जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए वैश्विक संवाद में शामिल होना होगा। हमें शांति को बढ़ावा देने और हिंसा को रोकने के लिए एक साथ काम करना होगा।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

हमें शस्त्र प्रतिस्पर्धा को संबोधित करने और निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को लागू करने के लिए एक साथ काम करना होगा। हमें संघर्षों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र जैसी अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को भी मजबूत करना होगा।

मानवीय सहायता

हमें संघर्षों के कारण पीड़ित लोगों को मानवीय सहायता प्रदान करनी होगी। हमें युद्धोत्तर समाजों में शांति निर्माण प्रयासों का भी समर्थन करना होगा। हमें संघर्षों से प्रभावित लोगों के कल्याण को प्राथमिकता देनी होगी और मानवीय संकट का समाधान करना होगा।

भारत की शांति निर्माण में भूमिका

1

संवाद को बढ़ावा देना

भारत अपने क्षेत्र में संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान और संवाद को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत के पास शांति निर्माण प्रयासों में लंबा इतिहास है, और वह अपने अनुभव का लाभ उठाकर संवाद और सहयोग को बढ़ावा दे सकता है।

2

क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करना

भारत क्लाइमेट चेंज, आतंकवाद और आर्थिक विकास जैसी साझा चुनौतियों को संबोधित करने के लिए क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत कर सकता है। भारत अपने पड़ोसियों के साथ विश्वास बनाने और क्षेत्र में स्थिरता को बढ़ावा देने पर काम कर सकता है।

3

मानवीय सहायता

भारत संघर्ष प्रभावित देशों सहित जरूरतमंद देशों को मानवीय सहायता प्रदान करना जारी रख सकता है। भारत संघर्ष-पश्चात् समाजों में शांति निर्माण प्रयासों का समर्थन भी कर सकता है, जिससे बुनियादी ढांचे और संस्थाओं का पुनर्निर्माण हो सके।

भारत की पूर्व की ओर देखो और पूर्व की ओर कार्य करो नीतियाँ

25

महाकाव्य

रामायण और महाभारत का पूर्वी एशिया के कई देशों में गहरा सांस्कृतिक प्रभाव है। भारत इन साझा परंपराओं का उपयोग इन देशों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए कर सकता है।

2500

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म भारत और पूर्वी एशिया के बीच एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पुल है। भारत अपने बौद्ध धरोहर को बढ़ावा दे सकता है और इन देशों के साथ अपने आध्यात्मिक और दार्शनिक संबंधों पर निर्माण कर सकता है।

12

भाषा पुल

भारत को पूर्वी एशियाई देशों के साथ मजबूत भाषाई संबंध बनाने की जरूरत है, जिसमें भाषा पाठ्यक्रमों, फिल्मों को डब करना और बच्चों की साहित्य को बढ़ावा देना शामिल है। भाषा समझ और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

सांस्कृतिक संबंधों का लाभ उठाना

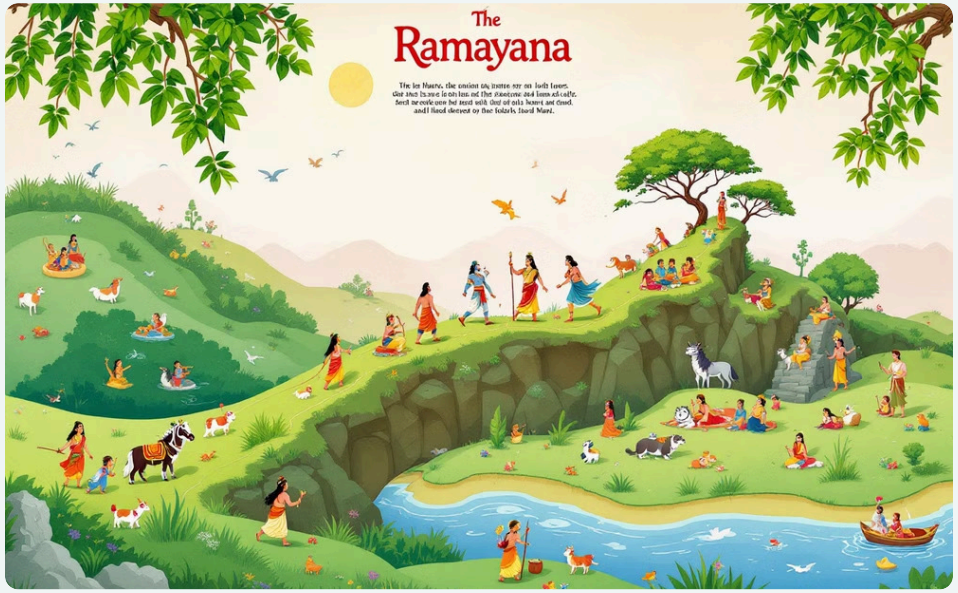

रामायण

रामायण धर्म, कर्तव्य और साहस की एक शक्तिशाली कहानी है, जिसकी सार्वभौमिक अपील है जो सभ्यताओं में प्रतिध्वनित होती है। भारत इस महाकाव्य का उपयोग अन्य देशों के साथ संबंध बनाने के लिए कर सकता है।

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म भारत और पूर्वी एशिया में एक लंबी और समृद्ध इतिहास है। भारत अपने बौद्ध धरोहर को बढ़ावा दे सकता है और इन देशों के साथ अपने आध्यात्मिक और दार्शनिक संबंधों पर निर्माण कर सकता है।

भाषा पुल बनाना

भाषा शब्दों से अधिक है - यह समझ, सहानुभूति और सांस्कृतिक संबंध की एक द्वार है। भाषिक आदान-प्रदान और अनुवाद को बढ़ावा देकर, देश बाधाओं को तोड़ सकते हैं और गहरी पारस्परिक समझ पैदा कर सकते हैं।

ये छवियां भाषा पुलों को बनाने के विविध तरीकों को दर्शाती हैं: शैक्षिक अध्ययन, साहित्यिक अनुवाद, पर्यटन और बच्चों की शैक्षिक सामग्री के माध्यम से। प्रत्येक बातचीत सांस्कृतिक संवाद, पारस्परिक सम्मान और गहरे क्षेत्रीय सहयोग का एक अवसर बन जाती है।

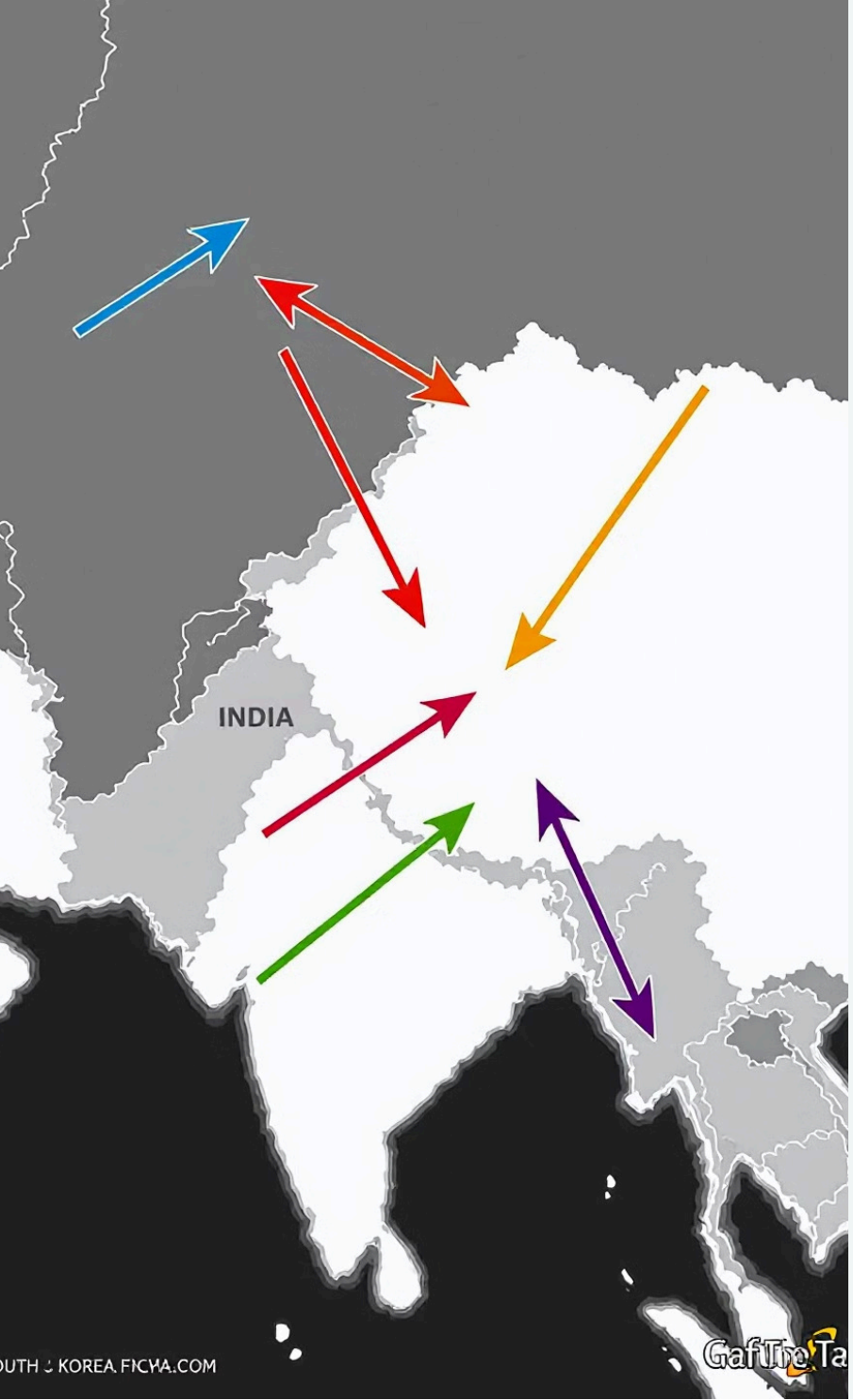

Ojaank Gurukul | IAS

कार्रवाई की आवश्यकता

1

भाषा शिक्षा में निवेश करें

भारत को पूर्वी एशियाई देशों में बोली जाने वाली भाषाओं के लिए शिक्षा कार्यक्रमों में निवेश करना चाहिए और सीखने के अवसर पैदा करना चाहिए।

2

सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दें

भारत को पूर्वी एशियाई दर्शकों से जुड़ने के लिए फिल्म महोत्सव, संगीत कार्यक्रम और कला प्रदर्शनियों सहित सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए।

3

आर्थिक साझेदारियों को प्रोत्साहित करें

भारत को व्यापार, निवेश और प्रौद्योगिकी सहयोग को बढ़ावा देकर पूर्वी एशियाई देशों के साथ आर्थिक साझेदारियों को मजबूत करना चाहिए।

पूर्व को आकर्षित करें

भारत की पूर्व नीति में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। इन सफलताओं पर आगे बढ़ते हुए, भारत को पूर्व एशिया के साथ आर्थिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए एक पूर्व को आकर्षित करने की नीति अपनानी चाहिए। भारत अपने जीवंत संस्कृति, प्राचीन धरोहर और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को प्रदर्शित करके पूर्व क्षेत्र से निवेश, पर्यटन और प्रतिभा को आकर्षित कर सकता है।

Follow Ojaank Sir

IAS with Ojaank Sir

Ojaank_Sir

IAS with Ojaank Sir

Free PDF Content

पाने के लिए अभी JOIN करें

8285894079

8285894079